

**अर्थशास्त्र की प्रकृति एवं क्षेत्र का वर्णन करे। (Discuss the scope and subject-matter of Economics.)**

Ans. अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन की जाने वाली सभी बातें अर्थशास्त्र के क्षेत्र (Scope) के अन्तर्गत आती हैं। संक्षेप में, अर्थशास्त्र के क्षेत्र का वर्णन करते समय हमें को निम्नलिखित बातों का अध्ययन करना पड़ता है.

(1) अर्थशास्त्र का स्वभाव (Nature of Economics) अर्थात्-अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा कला अथवा दोनों।

(2) अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री (Subject matter of Economics ) ।

(3) अर्थशास्त्र की सीमायें तथा मान्यतायें (Limitations and assumptions of Economics)

1. अर्थशास्त्र का स्वभाव (Nature of Economic) अथवा, अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला के रूप में-

मुख्यतः सभी ज्ञान को दो भागों में विभक्त किया जाता है-(1) विज्ञान (2) कला। विज्ञान को भी दो भागों में विभक्त किया गया-(1) वास्तविक विज्ञान (Positive Science) (2) आदर्श विज्ञान (Normative Science)

(a) अब हमें देखना है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनों अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में (Economic as a Science)

(b) ज्ञान के उस रूप को जो चार शर्तें पूरी करता है विज्ञान कहलाता है। ये चार शर्तें हैं-

(1) विज्ञान के अध्ययन का एक क्रम होना चाहिए (2) इसके अपने सिद्धांत और नियम होने चाहिए (3) ये सिद्धांत कारण और परिणाम (Cause and effect) को संबंधित करने वाले होने चाहिए (4) इसके नियमों में सार्वभौमिक सत्यता का गुण होना चाहिए। विज्ञान की इन चार शर्तों रूपी कसौटी पर अर्थशास्त्र को कसकर यह निष्कर्ष निकालेंगे कि अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा नहीं।

(1) अर्थशास्त्र का अध्ययन क्रमबद्ध किया जाता है- इस शर्त का जहाँ तक प्रश्न है अर्थशास्त्र पूर्णतया इसे पूरा करता है। दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र का अध्ययन क्रम किया

जाता है। उदाहरणार्थ अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम उपभोग आता है। जब उपभोग करने की आवश्यकता होती है तब उत्पादन करने की आवश्यकता अनुभव की जाती है, इसलिए मे अर्थशास्त्र में उपभोग पहले और उत्पादन बाद में आता है। विनिमय की आवश्यकता उत्पादन के बाद ही अनुभव होती है। इसलिए अर्थशास्त्र में उत्पादन के बाद "विनिमय" आता है। विनिमय और उत्पादन हो चुकने के बाद ही वितरण की आवश्यकता अनुभव होती है। इसलिए अर्थशास्त्र में उत्पादन और विनिमय के पश्चात् "वितरण" का अध्ययन किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि चूंकि अर्थशास्त्र में उपभोग, उत्पत्ति, विनिमय तथा वितरण का अध्ययन क्रमानुसार किया जाता है इसलिए अर्थशास्त्र पहली शर्त के अनुसार विज्ञान है।

(2) अर्थशास्त्र के नियम और सिद्धांत हैं- विज्ञान होने के लिए दूसरी शर्त यह है कि उसके निश्चित नियम होने चाहिए। अर्थशास्त्र के भी कुछ नियम हैं- सम सीमान्त उपयोगिता नियम, सीमान्त उपयोगिता हास नियम, माँग और पूर्ति का नियम आदि। चूंकि अर्थशास्त्र विज्ञान होने की शर्त को पूरी करता है अतः इस दृष्टिकोण से भी अर्थशास्त्र को विज्ञान मानना युक्तियुक्त है।

( 3 ) अर्थशास्त्र के नियम, कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट कर देते हैं कि विज्ञान के लिए तीसरी शर्त यह है कि उसके नियम ऐसे हों जो कारण और परिणाम को संबंधित करते हों। दूसरे शब्दों में, वे नियम कारण और परिणाम के संबंध को स्पष्ट कर देते हैं। उदाहरणार्थ, माँग के नियम के अनुसार मूल्य में होने वाला परिवर्तन माँग की मात्रा में परिवर्तन कर देता है। दूसरे शब्दों में, कारण का ज्ञान होने पर हम परिणाम पर पहुँच सकते हैं और यदि परिणाम ज्ञात होता है तो कारण ज्ञात किया जा सकता है। चूंकि अर्थशास्त्र विज्ञान की इस शर्त को भी पूरा करता है इसलिए इस दृष्टिकोण से भी अर्थशास्त्र विज्ञान है।

( 4 ) अर्थशास्त्र के कुछ नियम सार्वभौमिक हैं- अर्थशास्त्र के नियम अधिकतर मानवीय प्रकृति (Human nature) पर आधारित होने के कारण संसार के प्रत्येक देशवासियों पर प्रत्येक समय पर लागू होते हैं। जैसे सीमान्त उपयोगिता हास

नियम संसार के प्रत्येक देशवासियों पर समान रूप से लागू होता है। अतः स्पष्ट है कि इस शर्त के अनुसार भी अर्थशास्त्र एक विज्ञान है।

(b) अब हमें देखना है कि अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है अथवा आदर्श विज्ञान प्राचीन अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्री का कर्तव्य खोजना तथा विश्लेषण करना है, प्रतिपादन अथवा आलोचना करना नहीं (The function of the economist is to explore and not advocate or condemn) । विज्ञान वास्तविक स्थिति को बताता है अर्थात् क्या है (What is) का उत्तर विज्ञान देता है। क्या होना चाहिए (What ought to be) से उसका कोई संबंध नहीं होता। प्राचीन अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मानकर उक्त मत के प्रतिपादक थे। परन्तु आज कोई भी उनके इस विचार से सहमत नहीं है। आज हमें केयनक्रास (Cairneross) के इस मत से सहमत होना पड़ता है- "अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र को अपने विषय के विश्लेषण में लाने से चाहे कितना ही क्यों न सकुचाता हो, परन्तु मार्ग दर्शन करने के लिए जो उससे अपेक्षित है, नीतिशास्त्र को अर्थशास्त्र में लाना ही पड़ेगा।" अतः अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान ही नहीं वरन् आदर्श विज्ञान भी है (Economics is both a positive science and a normative science)

(c) अर्थशास्त्र कला के रूप में (Economic as an Art) "कला वास्तविक विज्ञान से आदर्श विज्ञान तक ले जाने वाली एक सड़क के समान है।" अर्थात् कला के अन्तर्गत "कैसा होना चाहिए" प्रश्न का उत्तर मिलता है। उदाहरण के लिए कला हमें यह बताती है कि विष का पान नहीं करना चाहिए क्योंकि विषपान करने से जीवन की समाप्ति हो जाती है। अर्थशास्त्र कला है क्योंकि अर्थशास्त्र के द्वारा हम बहुत-सी व्यावहारिक समस्याओं का समाधान कर पाने में समर्थता प्राप्त करते हैं। उदाहरणार्थ? जब कोई उद्योगपति अपने कारखानों में आर्थिक नियमों का आश्रय लेता है तब यह शास्त्र कला के रूप में होती है। पिगू महोदय का मत है कि विज्ञान के दो पक्ष होते हैं (1) ज्ञानदायक (2) फलदायक निष्कर्षतः अर्थशास्त्र देश की समस्याओं को ही नहीं बताता वरन् उन समस्याओं के समाधान के उपाय भी बताता है। उदाहरणार्थ भारत की पिछड़ी खेती की समस्या को बताकर ही यह

शास्त्र नहीं रह जाता। वरन् खेती की पिछड़ी अवस्था को सुधारने के उपाय भी बताता है। अतः यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र विज्ञान ही नहीं वरन् कला भी है। (Economic is both Science and Art)।

## 2. अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री (Subject-Matter of Economic)

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री तथा क्षेत्र (Subject-matter)- अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री का सम्बन्ध आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन से है। आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है

(1) उपभोग (Consumption) - उपभोग के अन्तर्गत हम मनुष्य की आवश्यकताओं तथा उनसे संबंधित नियमों आदि का अध्ययन करते हैं। हम जानते हैं कि उपभोग ही समस्त आर्थिक क्रियाओं को जन्म देता है। यदि मनुष्य की आर्थिक क्रियायें न हों तो उत्पत्ति, विनिमय, वितरण की कोई आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रकार यह अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विभाग है।

(2) उत्पत्ति (Production)- उत्पत्ति के अन्तर्गत हम धन की उत्पत्ति से संबंध रखने वाली सभी समस्याओं का अध्ययन करते हैं। उत्पत्ति के साधन जैसे- भूमि (Land), श्रम (Labour), पूँजी (Capital), साहस (Enterprise) व्यवस्था (Organization) आदि के महत्व तथा उनसे संबंध रखने वाली समस्याओं का अध्ययन उत्पत्ति में ही किया जाता है। अर्थशास्त्र में उपभोग की भाँति उत्पत्ति का भी उतना ही महत्व है।

(3) विनिमय (Exchange)- विनिमय के अन्तर्गत हम उन समस्याओं का अध्ययन करते हैं जो मूल्य के निर्धारण, बजार के विस्तार तथा साख के प्रयोग आदि से संबंध रखती है। आधुनिक युग में विनिमय का महत्व उपभोग तथा उत्पत्ति से भी अधिक बढ़ गया है। उपभोग तथा उत्पत्ति की क्रियाओं का विस्तार बहुत कुछ विनिमय पर निर्भर होता है।

( 4 ) वितरण (Distribution)- हम जानते हैं कि आधुनिक युग में उत्पत्ति के पाँच साधनों के परस्पर सहयोग से ही धन की उत्पत्ति होती है जिसे राष्ट्रीय आय

(National Income) के नाम से पुकारते हैं। इसी का वितरण उपर्युक्त पाँच साधनों के बीच लगान (Rent), मजदूरी (Wages), ब्याज (Interest), तथा लाभ (Profit) के रूप में होता है। वितरण के महत्व तथा जटिल स्वरूप को देखते हुए अर्थशास्त्र में इसका विशेष महत्व माना जाता है।

(5) राजस्व (Public Finance)- हमारी आर्थिक क्रियाओं के संचालन तथा निर्धारण में राज्य (State) का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। सरकार अपना कार्य चलाने के लिए करों आदि द्वारा आय (Revenue) प्राप्त करती है और सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure) को विभिन्न मदों पर व्यय करती है। यह अध्ययन हम राजस्व (Public Finance) में करते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त सभी विषयों को मिलाकर अर्थशास्त्र की विषय सामग्री बनती है। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री के संबंध में एक बात उल्लेखनीय है कि अर्थशास्त्र एक सामाजिक शास्त्र है जिसका प्रारम्भ और अन्त मानव है। इसका अर्थ यह हुआ कि सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य उपभोग, उत्पत्ति, विनिमय, वितरण तथा राजस्व संबंधी जो भी आर्थिक क्रियाएँ करता है वे सब अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में शामिल हैं।

### 3. अर्थशास्त्र की सीमायें तथा मान्यतायें

#### सीमाएँ

- (1) अर्थशास्त्र मानव की धन संबंधी क्रियाओं का अध्ययन है।
- (2) अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक मानव का ही अध्ययन किया जाता है। (3) अर्थशास्त्र के अन्तर्गत वास्तविक व्यक्ति का अध्ययन ही किया जाता है, न कि काल्पनिक व्यक्ति का
- (4) अर्थशास्त्र केवल सामान्य व्यक्तियों का अध्ययन करता है न कि चोरों, डकैतों तथा पागलों का
- (5) अर्थशास्त्र के नियम भौतिक विज्ञान की भाँति पूर्णतया सत्य नहीं होते। इसका कारण यह है कि अर्थशास्त्र एक सामाजिक विषय है इसलिए परिस्थितियों के अनुसार नियम भी बदलते रहते हैं। इसी दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र के नियमों का

वर्णन करते समय "यदि अन्य बातें समान रहें" (If other things remaining the same) वाक्यांश जोड़ा जाता है।

मान्यतायें-

(1) अर्थशास्त्र यह मानकर चलता है कि मनुष्य विवेकशील तथा तर्कवादी होता है। यदि उसे अच्छी तथा बुरी दोनों वस्तुएँ दी जायें तब वह अच्छी वस्तु को ही प्राप्त करेगा। यदि किसी व्यक्ति को गेंद और जूतों की आवश्यकता है तब वह पहले जिसकी अधिक आवश्यकता होगी उसे ही खरीदेगा।

(2) अर्थशास्त्र में अध्ययन किये जाने वाले व्यक्ति के विषय में यह मान्यता दी जाती है कि वह वस्तु को, जो उसकी आवश्यकता को अधिक संतुष्ट करती है, अपेक्षाकृत अधिक महत्व देता है।

(3) मनुष्य पर आर्थिक क्रियायें अधिकाधिक प्रभाव डालती हैं। यद्यपि अर्थशास्त्र में अध्ययन किये जाने वाले मानव में दया-धर्म का अभाव नहीं होता तथापि वह अपने साधनों से अधिकाधिक संतोष प्राप्त करने का प्रयास करता है। उदाहरणार्थ, विक्रेता अपनी वस्तु को अधिक से अधिक मूल्य पर बेचना चाहता है जबकि क्रेता उसे कम से कम मूल्य पर खरीदने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार मिल मालिक श्रमिकों को कम मजदूरी देकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त करना चाहता है।

(4) प्राचीन काल से लेकर आज तक अर्थशास्त्र में पूँजीवादी समाज का ही अध्ययन किया जाता है, क्योंकि पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था में आर्थिक क्रियायें अपना अधिक प्रभाव रोज दिखाने में सफलता प्राप्त कर पाती हैं।